Daily
CURRENT
AFFAIRS
IAS/PCS
दैनिक जागरण
The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE
दैनिक भास्कर
THE HINDU
जनसत्ता
Result Mitra
अब होगी करंट अफेयर्स की राह आसान
15 January

Quote of the Day

Result Mitra

मन पर नियंत्रण रखना सीखे,
क्योंकी अनियंत्रित मन ही
आपके और आपकी,
सफलता के बीच का काँटा है !

Result Mitra

बोडा त्योहार - चर्चा में

बोडा त्योहार - चर्चा में

Result Mitra

- हाल ही में हट्टी जनजातियों ने अपना सबसे बड़ा वार्षिक उत्सव, बोडा त्योहार, हर्षोल्लास के साथ मनाया। यह त्योहार हट्टी समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और सामुदायिक भावना को प्रदर्शित करता है।
- यह पर्व न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है, बल्कि समुदाय को आपस में जोड़ने और उनकी परंपराओं को सुदृढ़ करने का कार्य करता है।

बोडा त्योहार - चर्चा में

Result Mitra

- हाल ही में हट्टी जनजातियों ने अपना सबसे बड़ा वार्षिक उत्सव, बोडा त्योहार, हर्षोल्लास के साथ मनाया। यह त्योहार हट्टी समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और सामुदायिक भावना को प्रदर्शित करता है।
- यह पर्व न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है, बल्कि समुदाय को आपस में जोड़ने और उनकी परंपराओं को सुदृढ़ करने का कार्य करता है।

बोडा त्योहार का परिचय

- शुरुआत: बोडा त्योहार की शुरुआत पौष द्वादशी की पूर्व संध्या पर होती है। यह पर्व पूरे माघ महीने तक चलता है, जिससे यह एक दीर्घकालिक उत्सव बन जाता है। इस त्योहार के माध्यम से हट्टी जनजाति अपनी परंपराओं, संस्कृति और सामुदायिक एकता को सजीव बनाए रखती है।
- समयावधि: यह त्योहार पूरे माघ महीने तक मनाया जाता है, जिसमें तीन प्रमुख चरण होते हैं। हर चरण का अपना अलग महत्व और उद्देश्य है।

Result Mitra

बोडा त्योहार का परिचय

तीन चरणों में बोडा त्योहार

1. बोधतो:

- इस चरण में पारंपरिक व्यंजनों को तैयार किया जाता है और उन्हें देवताओं को अर्पित किया जाता है। यह पूजा-अर्चना का समय होता है, जिसमें समुदाय के लोग अपने ईष्ट देवताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

Result Mitra

बोडा त्योहार का परिचय

तीन चरणों में बोडा त्योहार

2. सांझा आंगन:

- दूसरे चरण मे सामूहिक भोज का आयोजन किया जाता है। इस दौरान सामुदायिक गायन और नृत्य का आयोजन होता है। सांझा आंगन का उद्देश्य समुदाय के सभी सदस्यों को एक साथ लाना और उनके बीच आपसी प्रेम और सामंजस्य को बढ़ावा देना है।

Result Mitra

बोडा त्योहार का परिचय

तीन चरणों में बोडा त्योहार

3. बोईदूत:

- यह चरण त्योहार के अंतिम दिनों तक चलता है। इसमें सामूहिक भोज और पारंपरिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। यह पूरे उत्सव का समापन चरण होता है, जिसमें हट्टी समुदाय अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों को सहेजते हैं।

Result Mitra

बोडा त्योहार का परिचय

संस्कृति और परंपराएं

बोडा त्योहार हट्टी जनजाति की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक है। इस त्योहार के दौरान निम्नलिखित परंपराओं का पालन किया जाता है: शिरगुल महाराज

- 1. देवताओं को समर्पण: इस पर्व में शिरगुल महाराज, बिजट महाराज और अन्य स्थानीय देवताओं की पूजा की जाती है। यह पूजा समुदाय की धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं को जीवित रखने का माध्यम है।

Result Mitra

बोडा त्योहार का परिचय

संस्कृति और परंपराएं

साजे का दूना (उपहार)

- 2. विवाहित बहनों को उपहार: बोडा त्योहार में विवाहित बहनों को साजे का दूना (उपहार) देने की परंपरा है। यह परंपरा परिवार के बीच प्रेम और सम्मान को दर्शाती है।
- 3. हट्टी महिलाओं का योगदान: त्योहार में हट्टी महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे पारंपरिक नृत्य और संगीत में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।

Result Mitra

बोडा त्योहार का परिचय

संस्कृति और परंपराएं

- 4. सामूहिक भोज: सामुदायिक भोज इस पर्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें पूरे समुदाय के लोग एक साथ भोजन करते हैं, जो आपसी एकता और भाईचारे का प्रतीक है।

Result Mitra

हट्टी समुदाय का परिचय

- 1. नामकरण और व्यवसाय: हट्टी समुदाय का नाम उनके पारंपरिक कार्य से जुड़ा हुआ है। ये लोग कस्बों में "हाट" नाम के छोटे बाजारों में घरेलू फल, सब्जी, मांस, ऊन आदि बेचते थे। इसी कारण इन्हें "हट्टी" कहा जाता है।
- 2. भौगोलिक स्थिति: हट्टी समुदाय मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में निवास करता है। इसके अलावा, उत्तराखंड के गिरी और टोंस नदियों के बीच के क्षेत्र में भी यह समुदाय पाया जाता है।

Result Mitra

हट्टी समुदाय का परिचय

- 3. सामाजिक समानताएं: हट्टी समुदाय उत्तराखंड के जौनसारी समुदाय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक समानताएं रखता है। जौनसारी समुदाय को 1967 में अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिला था। हट्टी समुदाय भी इस दर्जे के लिए लंबे समय से संघर्ष कर रहा है।

Result Mitra

हट्टी समुदाय का परिचय

- 4. खुंबली परिषद: हट्टी समुदाय में "खुंबली" नामक पारंपरिक परिषद होती है। यह परिषद समुदाय से जुड़े विभिन्न मामलों को सुलझाने और उनके पारंपरिक कानूनों को लागू करने का कार्य करती है। यह समुदाय के भीतर न्याय और अनुशासन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Result Mitra

बोडा त्योहार का महत्व

बोडा त्योहार न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है, बल्कि यह समुदाय के लोगों के बीच आपसी संबंधों को मजबूत करने और उनकी परंपराओं को सहेजने का माध्यम भी है। यह त्योहार हट्टी समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है।

- 1. सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण: बोडा त्योहार हट्टी समुदाय की परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों को जीवित रखने का माध्यम है।

Result Mitra

बोडा त्योहार का महत्व

- 2. सामुदायिक एकता: यह पर्व सामुदायिक एकता और भाईचारे को प्रोत्साहित करता है। सामूहिक भोज और सांझा आंगन जैसे आयोजन समुदाय के सभी वर्गों को जोड़ते हैं।
- 3. आर्थिक महत्व: त्योहार के दौरान पारंपरिक उत्पादों और वस्त्रों की मांग बढ़ती है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

Result Mitra

बोडा त्योहार का महत्व

- बोडा त्योहार हट्टी समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का प्रतीक है।
- यह पर्व न केवल उनकी पहचान को सुदृढ़ करता है, बल्कि समुदाय के बीच आपसी प्रेम और सहयोग को भी प्रोत्साहित करता है।
- हट्टी समुदाय के संघर्ष और उनके द्वारा सहेजी गई परंपराओं को समझने के लिए बोडा त्योहार का अध्ययन और इसे प्रोत्साहन देना आवश्यक है।

Result Mitra

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/कौन से सही हैं?

1. बोडा त्योहार हट्टी समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का प्रतीक है और यह पूरे माघ महीने तक मनाया जाता है।
2. बोडा त्योहार के पहले चरण, 'बोधतो', में पारंपरिक व्यंजनों को तैयार किया जाता है और सामूहिक भोज का आयोजन किया जाता है।
3. बोडा त्योहार के दौरान हट्टी महिलाओं का मुख्य योगदान पारंपरिक नृत्य और संगीत में होता है।
4. हट्टी समुदाय का नाम उनके पारंपरिक काम से जुड़ा हुआ है, जिसमें वे "हाट" नाम के छोटे बाजारों में फल, सब्जी और मांस बेचते थे।

कूट:

(a) 1, 3 और 4 सही हैं।
(b) 2 और 4 सही हैं।
(c) 1 और 3 सही हैं।
(d) 1, 2, 3 और 4 सभी सही हैं।

माउंट इबू ज्वालामुखी में विस्फोट

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

- इंडोनेशिया के उत्तरी मालुकु प्रांत में स्थित माउंट इबू ज्वालामुखी में हाल ही में कई विस्फोट हुए हैं, जिनसे गर्म लावा और राख का उत्सर्जन हुआ है। 11 जनवरी 2025 को हुए विस्फोट में राख का गुबार 4,000 मीटर की ऊंचाई तक पहुंचा, और लावा क्रेटर से दो किलोमीटर तक फेंका गया।

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

- इससे पहले, 7 जनवरी 2025 को भी माउंट इबू में विस्फोट हुआ था, जिससे राख का स्तंभ 3 किलोमीटर तक ऊपर उठा और भूरा बादल ज्वालामुखी के उत्तर-पश्चिम में बह गया।
- इस घटना के बाद ज्वालामुखी विज्ञान और भूगर्भीय खतरा शमन केंद्र ने उड़ान अलर्ट जारी किया था।

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

- स्थानीय अधिकारियों ने निवासियों और पर्यटकों को क्रेटर के चारों ओर 4 से 5.5 किलोमीटर के दायरे में प्रवेश करने से मना किया है।
- साथ ही, राख गिरने के दौरान बाहरी गतिविधियों में शामिल होने पर फेस मास्क और धूप का चश्मा पहनने की सलाह दी गई है।

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

- माउंट इबू इंडोनेशिया के सबसे सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक है, जो 2023 में कुल 21,100 विस्फोटों के साथ देश का दूसरा सबसे सक्रिय ज्वालामुखी रहा।
- इन विस्फोटों के चलते स्थानीय समुदायों को सतर्क रहने और अधिकारियों द्वारा जारी निर्देशों का पालन करने की सलाह दी गई है।

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

इंडोनेशिया

- इंडोनेशिया दक्षिण पूर्व एशिया और ओशिनिया में स्थित एक विशाल देश है। जिसकी राजधानी जकर्ता से (कालिमन्तन) नूसन्तारा हो गयी है एवं यह 17,508 द्वीपों वाले इस देश की जनसंख्या लगभग 27 करोड़ है, यह दुनिया का चौथा सबसे अधिक आबादी और दुनिया में सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाला देश है।

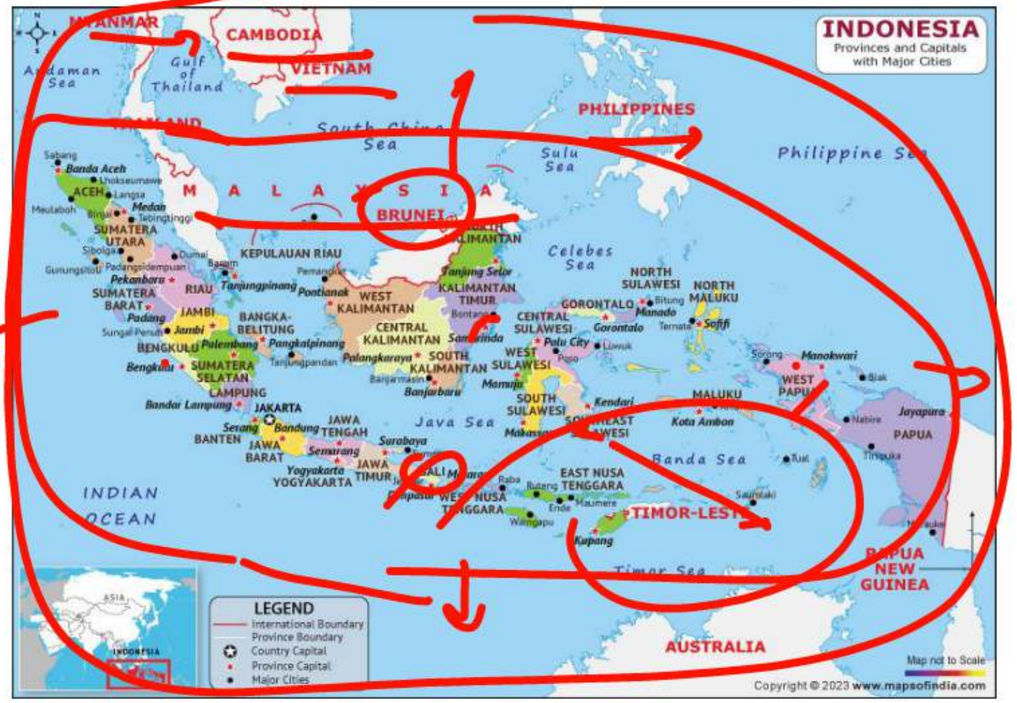

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

इंडोनेशिया

इंडोनेशिया के उत्तरी मालुकु प्रांत

- इंडोनेशिया के उत्तरी मालुकु प्रांत में कई द्वीप हैं। यह प्रांत पूर्वी इंडोनेशिया के मोलुकास द्वीप समूह के उत्तरी हिस्से में स्थित है। उत्तरी मालुकु प्रांत की स्थापना 12 अक्टूबर, 1999 को हुई थी.

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

उत्तरी मालुकु प्रांत के बारे में

- यह प्रांत प्रशांत महासागर, हलमाहेरा सागर, सेरम सागर, और मोलुक्का सागर से घिरा है।
- यहां कई जातीय समूह रहते हैं और कई तरह की भाषाएं बोली जाती हैं।
- यहां की अर्थव्यवस्था कृषि, मछली पकड़ना, और वानिकी पर निर्भर करती है।

माउंट इबू,ज्वालामुखी में विस्फोट

Result Mitra

उत्तरी मालुकु प्रांत के बारे में

- यहां के प्रमुख शहरों में टेरनेट, सोसिउ, टिडोर, सोफ़िफ़ी, टोबेलो, गैलेला, और काओ शामिल हैं।
- यहां के प्रमुख उत्पादों में चावल, मक्का, ज़ायफल, लौंग, मछली, सोना, और निकल शामिल हैं।
- यहां के प्रमुख ज्वालामुखियों में माउंट इबू शामिल है।

माउंट इबू

- माउंट इबू इंडोनेशिया के हलमाहेरा द्वीप के उत्तर-पश्चिमी तट पर एक स्ट्रेटोवोलकैनो है। शिखर छोटा है और इसमें घोंसलेदार क्रेटर हैं। आंतरिक क्रेटर 1 किमी चौड़ा और 400 मीटर गहरा है, जबकि बाहरी 1.2 किमी चौड़ा है। शिखर के उत्तर-पूर्व में एक बड़ा परजीवी शंकु है और दक्षिण-पश्चिम में एक छोटा शंकु है।
- माउंट इबू, इंडोनेशिया के हल्माहेरा द्वीप पर स्थित एक सक्रिय ज्वालामुखी है। यह प्रशांत महासागर के 'रिंग ऑफ़ फ़ायर' में आता है।

Result Mitra

माउंट इबू

- यह एक स्ट्रैटोज्वालामुखी है।
- यह इंडोनेशिया के सबसे सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक है।
- यह समुद्र तल से 1,377 मीटर की ऊंचाई पर है।
- यह पूर्व से पश्चिम तक 16 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण तक 13 किलोमीटर तक फैला हुआ है।

Result Mitra

माउंट इबू

- माउंट इबू के शिखर पर छोटा शंकु है और उत्तर-पूर्व में एक बड़ा परजीवी शंकु है।
- माउंट इबू में पिछले कई सालों से लगातार विस्फोट हो रहे हैं।
- माउंट इबू के विस्फोट से गर्म लावा, राख, और काले बादल निकलते हैं।
- माउंट इबू के विस्फोट के बाद आस-पास के गांवों को खाली कराना पड़ता है।

Result Mitra

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/कौन से सही हैं?

1. माउंट इबू, इंडोनेशिया के हलमाहेरा द्वीप के उत्तर-पश्चिमी तट पर स्थित एक स्ट्रेटोवोलकैनो है और यह इंडोनेशिया के सबसे सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक है।
2. माउंट इबू के हालिया विस्फोटों से निकलने वाली राख का गुबार 4,000 मीटर की ऊंचाई तक पहुंचा और लावा क्रेटर से केवल 1 किलोमीटर तक फेंका गया।
3. माउंट इबू के विस्फोटों के बाद, आसपास के गांवों को खाली कराना पड़ता है और स्थानीय अधिकारियों ने 4 से 5.5 किलोमीटर के दायरे में प्रवेश करने से मना किया है।

कूट:

(a) 1 और 3 सही हैं।

(b) 2 और 3 सही हैं।

(c) 1 और 2 सही हैं।

(d) 1, 2 और 3 सभी सही हैं।

Result Mitra

भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे एवं योगदान

भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे एवं योगदान

Result Mitra

- भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने 15 जनवरी 2025 को अपनी स्थापना के 150 वर्ष पूरे किए। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित समारोह में भाग लिया और 'मिशन मौसम' का शुभारंभ किया।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे एवं योगदान

Result Mitra

- प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि IMD की 150 वर्षों की यात्रा न केवल मौसम विभाग की प्रगति को दर्शाती है, बल्कि यह भारत में आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की विकास यात्रा का भी प्रतीक है।
- उन्होंने विभाग की उपलब्धियों की सराहना करते हुए बताया कि IMD ने इन डेढ़ शताब्दियों में लाखों भारतीयों की सेवा की है और यह भारत की वैज्ञानिक प्रगति का प्रतीक बन गया है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे एवं योगदान

Result Mitra

- इस अवसर पर 'मिशन मौसम' की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य भारत को मौसम की सभी परिस्थितियों के लिए तैयार करना और जलवायु के संदर्भ में एक स्मार्ट राष्ट्र बनाना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह मिशन सस्टेनेबल फ्यूचर और फ्यूचर रेडीनेस को लेकर भारत की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

भारत को मौसम की सभी परिस्थितियों के तैयार करना

भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे एवं योगदान

Result Mitra

- IMD की स्थापना 15 जनवरी 1875 को हुई थी, जो मकर संक्रांति के समय के आसपास है।
- प्रधानमंत्री ने इस संबंध में कहा कि मकर संक्रांति सूर्य के मकर राशि में प्रवेश और उत्तरायण का प्रतीक है, जो उत्तरी गोलार्ध में सूर्य के प्रकाश में वृद्धि को दर्शाता है और खेती की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण है।

15th January 1875

यह सूर्य के मकर राशि के प्रवेश एवं उत्तरायण का प्रतीक है

भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे एवं योगदान

- IMD ने अपनी 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय मौसम विज्ञान ओलंपियाड का आयोजन किया, जिसमें हजारों छात्रों ने भाग लिया। प्रधानमंत्री ने उम्मीद जताई कि इससे मौसम विज्ञान में युवाओं की रुचि बढ़ेगी।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे एवं योगदान

Result Mitra

- इस अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया गया, साथ ही वर्ष 2047 में IMD के भविष्य को रेखांकित करने वाला एक विज़न दस्तावेज़ प्रस्तुत किया गया। प्रधानमंत्री ने IMD के 150 वर्ष पूरे होने पर सभी नागरिकों को बधाई दी।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD)

- भारत मौसम विज्ञान विभाग की स्थापना साल 1875 में हुई थी.
- यह भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक एजेंसी है।
- IMD, देश की राष्ट्रीय मौसम विज्ञान सेवा है।
- IMD का मुख्यालय नई दिल्ली में है।
- IMD, दुनिया के पहले विकासशील देशों में से एक था जिसके पास अपना भूस्थैतिक उपग्रह था.

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

मुख्यालय- नई दिल्ली

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD)

- IMD, मौसम विज्ञान और इससे जुड़े विषयों में अनुसंधान करता है।
- IMD, मौसम से जुड़ी गतिविधियों के लिए मौसम संबंधी जानकारी देता है।
- IMD, गंभीर मौसम की घटनाओं के बारे में चेतावनी देता है।
- IMD, मौसम संबंधी आंकड़े उपलब्ध कराता है।
- IMD, भूकंपों के स्थान और केंद्र बिंदु का पता लगाता है।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD)

IMD के कुछ और काम:

- मौसम से जुड़े मामलों में प्रमुख सरकारी एजेंसी का काम करना
- मौसम से जुड़े मामलों में अनुसंधान करना
- मौसम से जुड़ी गतिविधियों के लिए मौसम संबंधी जानकारी देना
- मौसम से जुड़ी गंभीर घटनाओं के बारे में चेतावनी देना
- मौसम से जुड़े आंकड़े देना

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/कौन से सही हैं?

1. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) की स्थापना 15 जनवरी 1875 को हुई थी और इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।

2. 'मिशन मौसम' का उद्देश्य भारत को मौसम की सभी परिस्थितियों के लिए तैयार करना और जलवायु के संदर्भ में एक स्मार्ट राष्ट्र बनाना है।

3. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) का मुख्य काम मौसम से संबंधित डेटा और आंकड़े जुटाना और उसका विश्लेषण करना है, लेकिन यह मौसम चेतावनी जारी नहीं करता।

कूट:

(a) 1 और 2 सही हैं।

(b) 2 और 3 सही हैं।

(c) 1 और 3 सही हैं।

(d) 1, 2 और 3 सभी सही हैं।

Result Mitra

मकर संक्रान्ति और चीनी मांझा आखिर क्यों है इससे जान को खतरा

मकर संक्रान्ति और चीनी मांझा आखिर क्यों है इस से जान को खतरा।

Result Mitra

- मकर संक्रांति के अवसर पर पतंगबाजी एक लोकप्रिय परंपरा है, लेकिन चीनी मांझा (नायलॉन या सिंथेटिक धागा) का उपयोग गंभीर खतरे पैदा करता है।

मकर संक्रान्ति और चीनी मांझा आखिर क्यों है इस से जान को खतरा।

Result Mitra

चीनी मांझा के खतरे:

- **मानव जीवन के लिए खतरा:** चीनी मांझा अत्यधिक तेज और मजबूत होता है, जिससे यह आसानी से त्वचा को काट सकता है। सड़क पर चलते समय यह गले या अन्य अंगों को गंभीर रूप से घायल कर सकता है, जिससे जानलेवा हादसे हो सकते हैं।
- **पक्षियों के लिए खतरा:** पतंग उड़ाने के दौरान यह मांझा पेड़ों या आसमान में उड़ते पक्षियों के पंखों में फंसकर उन्हें घायल कर सकता है या उनकी मृत्यु का कारण बन सकता है।

मकर संक्रान्ति और चीनी मांझा आखिर क्यों है इस से जान को खतरा।

Result Mitra

चीनी मांझा के खतरे:

- **बिजली आपूर्ति में बाधा:** चीनी मांझा बिजली के तारों में फंसकर शॉर्ट सर्किट और बिजली कटौती का कारण बन सकता है, जिससे व्यापक क्षेत्र में बिजली आपूर्ति बाधित होती है।

मकर संक्रान्ति और चीनी मांझा आखिर क्यों है इस से जान को खतरा।

Result Mitra

चीनी मांझा के खतरे:

कानूनी प्रतिबंध:

- सरकार ने चीनी मांझा के उत्पादन, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाया है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 की धारा 15 के तहत, इसका उल्लंघन करने पर 5 साल तक की सजा और 1 लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है।

मकर संक्रान्ति और चीनी मांझा आखिर क्यों है इस से जान को खतरा।

Result Mitra

चीनी मांझा के खतरे:

सुरक्षित विकल्प:

- पतंगबाजी के लिए पारंपरिक सूती या कपास के धागों का उपयोग करें, जो पर्यावरण के अनुकूल और सुरक्षित होते हैं।

मकर संक्रान्ति और चीनी मांझा आखिर क्यों है इस से जान को खतरा।

Result Mitra

चीनी मांझा के खतरे:

सावधानियां:

- पतंग उड़ाते समय खुले स्थानों का चयन करें।
- बिजली के तारों से दूर रहें।
- सुरक्षा उपकरण, जैसे दस्ताने, का उपयोग करें।
- चीनी मांझा के खतरों के प्रति जागरूक रहकर और सुरक्षित विकल्पों का चयन करके हम अपने साथ-साथ अन्य जीवों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं।

Result Mitra

पतंगबाजी से जुड़े कुछ रोचक तथ्य

- पतंगबाजी की शुरुआत करीब 2,500-3,000 साल पहले हुई थी.
- माना जाता है कि सबसे पहले पतंग का आविष्कार चीन में हुआ था.
- पतंगबाजी भारत की सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा है।
- पतंगबाजी मकर संक्रांति के त्योहार पर सबसे ज़्यादा होती है।
- पतंगबाजी के लिए चाइनीज़ मांझा का इस्तेमाल खतरनाक होता है।
- पतंगबाजी के दौरान सुरक्षा के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए.

Result Mitra

पतंगबाजी से जुड़े कुछ और तथ्य:

- पतंगों का इस्तेमाल रेडियो ट्रांसमिशन के लिए किया जाता है।
- पतंगों का इस्तेमाल प्रकाश प्रभाव उत्पन्न करने के लिए भी किया जाता है।
- पतंगों का इस्तेमाल युद्धों में भी किया गया है।
- पतंगों का इस्तेमाल प्लेन उड़ाने के लिए भी किया गया है।
- पतंगों से जुड़े कई रिकॉर्ड बने हैं, जैसे कि सबसे बड़ी पतंग, सबसे छोटी पतंग, और लगातार 180 घंटे तक पतंग उड़ाना.

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/कौन से सही हैं?

1. चीनी मांझा का उपयोग मानव जीवन के लिए खतरे का कारण बन सकता है, क्योंकि यह तेज और मजबूत होता है और त्वचा को घायल कर सकता है।
2. सरकार ने चीनी मांझा के उत्पादन, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध नहीं लगाया है।
3. पतंगबाजी के दौरान पारंपरिक सूती या कपास के धागों का उपयोग करना पर्यावरण के अनुकूल और सुरक्षित होता है।

कूट:

(a) 1 और 3 सही हैं।

(b) 2 और 3 सही हैं।

(c) 1 और 2 सही हैं।

(d) 1, 2 और 3 सभी सही हैं।

Result Mitra

इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ता चलन इसके प्रभाव एवं दुष्प्रभाव

इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ता चलन इसके प्रभाव एवं दुष्प्रभाव

Result Mitra

- इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) का चलन तेजी से बढ़ रहा है, जो पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहा है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ता चलन इसके प्रभाव एवं दुष्प्रभाव

Result Mitra

इलेक्ट्रिक वाहनों के लाभ:

- 1. पर्यावरण संरक्षण: EVs के उपयोग से वायु प्रदूषण में कमी आती है, क्योंकि इनमें पारंपरिक पेट्रोल या डीजल इंजन नहीं होते, जिससे हानिकारक उत्सर्जन नहीं होता।
- 2. ऊर्जा सुरक्षा: EVs के उपयोग से जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होती है, जिससे ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि होती है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ता चलन इसके प्रभाव एवं दुष्प्रभाव

इलेक्ट्रिक वाहनों के लाभ:

- **3. कम परिचालन लागत:** EVs की परिचालन लागत पारंपरिक वाहनों की तुलना में कम होती है, क्योंकि बिजली की लागत ईंधन से कम होती है और रखरखाव की आवश्यकता भी कम होती है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ता चलन इसके प्रभाव एवं दुष्प्रभाव

Result Mitra

इलेक्ट्रिक वाहनों के दुष्प्रभाव:

- **1. बैटरी उत्पादन का पर्यावरणीय प्रभाव:** EVs में उपयोग होने वाली लिथियम-आयन बैटरियों के उत्पादन में खनिजों का खनन और प्रसंस्करण शामिल है, जिससे पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- **2. वजन और टायर घिसाव:** EVs का वजन पारंपरिक वाहनों से अधिक होता है, जिससे टायर तेजी से घिसते हैं और हानिकारक रसायन हवा में फैलते हैं।

इलेक्ट्रिक वाहनों के दुष्प्रभाव:

- **3. चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी:** भारत में EVs के लिए पर्याप्त चार्जिंग स्टेशन नहीं हैं, जिससे लंबी दूरी की यात्राओं में कठिनाई हो सकती है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ता चलन पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक है, लेकिन इससे जुड़े दुष्प्रभावों को ध्यान में रखते हुए उचित नीतियों और बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ता चलन इसके प्रभाव एवं दुष्प्रभाव

Result Mitra

इलेक्ट्रिक वाहनों के दुष्प्रभाव:

- **3. चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी:** भारत में EVs के लिए पर्याप्त चार्जिंग स्टेशन नहीं हैं, जिससे लंबी दूरी की यात्राओं में कठिनाई हो सकती है।

इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) के बारे में

- इलेक्ट्रिक वाहन, बिजली से चलने वाले वाहन होते हैं। ये वाहन, बैटरी से या किसी बाहरी स्त्रोत से बिजली लेकर चलते हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहन, पेट्रोल या डीज़ल से चलने वाले वाहनों की तुलना में पर्यावरण के लिए बेहतर होते हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहन, कम शोर करते हैं और कम प्रदूषण फैलाते हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहन, ईंधन और रखरखाव की लागत में कम खर्च करते हैं।

इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) के बारे में

- इलेक्ट्रिक वाहनों में, बैटरी चार्ज करने के लिए बिजली संयंत्रों से बिजली आती है।
- इलेक्ट्रिक वाहनों में, कार्बन डाइऑक्साइड (CO2) का उत्सर्जन कम होता है।
- इलेक्ट्रिक वाहनों में, बैटरी में करंट होने के बाद भी अगर कार पानी में चले तो भी ये पूरी तरह सुरक्षित होती हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहनों की कीमतें कम हो रही हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के लिए भारत सरकार भी प्रोत्साहित कर रही है।

Result Mitra

भारत के इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार

- भारत के इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार का आकार 2023 में 8.03 बिलियन अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है।
- पूर्वानुमान अवधि के दौरान 22.4% की सीएजीआर प्रदर्शित करते हुए, बाजार के 2024 में 23.38 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2032 तक 117.78 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

भारत के इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बनाने वाली कंपनियों के बारे में

- भारत में इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली प्रमुख कंपनियों में टाटा मोटर्स, महिंद्रा, बजाज ऑटो, और ओला इलेक्ट्रिक शामिल हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली कंपनियां, भारत की अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने में अहम भूमिका निभाती हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली कंपनियों ने नई तकनीकों का विकास किया है।

Result Mitra

भारत के इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बनाने वाली कंपनियों के बारे में

- इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली कंपनियों ने अपने उत्पादों की कीमतों में कटौती की है।
- इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली कंपनियों ने चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश किया है।
- इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली कंपनियों ने देशभर में डीलरशिप स्टोर खोले हैं।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/कौन से सही हैं?

1. इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) के उपयोग से वायु प्रदूषण में कमी आती है, क्योंकि इनमें पेट्रोल या डीजल इंजन नहीं होते हैं।

2. भारत के इलेक्ट्रिक वाहन (EV) बाजार का आकार 2023 में 8.03 बिलियन अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है और यह 2032 तक 117.78 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

3. भारत में इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली कंपनियों में टाटा मोटर्स, महिंद्रा, बजाज ऑटो, और ओला इलेक्ट्रिक शामिल नहीं हैं।

कूट:

(a) 1 और 2 सही हैं।

(b) 1 और 3 सही हैं।

(c) 2 और 3 सही हैं।

(d) 1, 2 और 3 सभी सही हैं।

Result Mitra
दैनिक जागरण
The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE
दैनिक भास्कर
THE HINDU
जनसत्ता
Daily
CURRENT
AFFAIRS
IAS/PCS
अब होगी करंट अफेयर्स की राह आसान
14 January

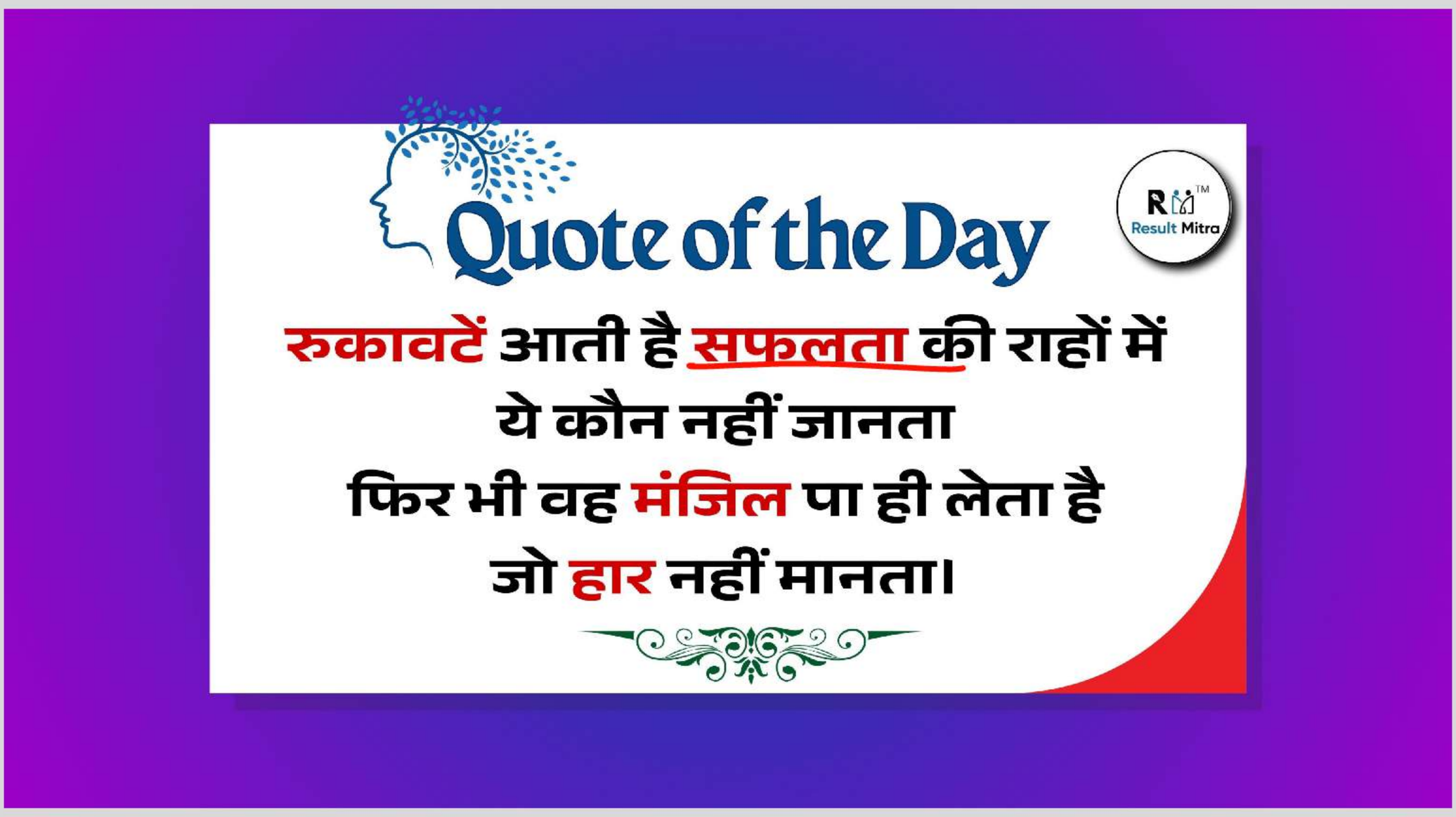
Quote of the Day
Result Mitra
रुकावटें आती है सफलता की राहों में
ये कौन नहीं जानता
फिर भी वह मंजिल पा ही लेता है
जो हार नहीं मानता।

आप सभी को
मकर संक्रांति
की हार्दिक शुभकामनाएं

Result Mitra

समृद्धि का प्रतीक लोहड़ी

समृद्धि का प्रतीक लोहड़ी

Result Mitra

- 13 जनवरी को लोहड़ी बहुत उत्साह के साथ मनाई गयी। यह खुशी का त्यौहार पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर सहित उत्तर भारतीय राज्यों में मनाया जाता है।
- लोहड़ी का सांस्कृतिक महत्व है क्योंकि यह एक एकजुटता की शक्ति के रूप में कार्य करता है, लोगों को एक साथ लाता है। लोहड़ी भारत में सबसे ज़्यादा मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है।

समृद्धि का प्रतीक लोहड़ी

Result Mitra

- खास तौर पर देश के उत्तरी भागों में। यह कठोर सर्दियों के अंत का प्रतीक है और आने वाले वसंत के लंबे, धूप वाले दिनों का स्वागत करता है। यह त्योहार किसानों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
- यह रबी की फ़सलों, ख़ास तौर पर गन्ना, गेहूँ और सरसों की कटाई का प्रतीक है। लोहड़ी फ़सल के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है, जो समृद्धि, खुशी और जीवन के नवीनीकरण का प्रतीक है।

लोहड़ी का इतिहास

लोहड़ी का महत्व

- लोहड़ी किसानों के लिए विशेष रूप से सार्थक है, क्योंकि यह गेहूं, गन्ना और सरसों जैसी रबी फसलों की कटाई का मौसम है। यह बुवाई के मौसम के अंत और एक नए कृषि चक्र की शुरुआत का भी प्रतीक है।
- कृषि से परे, यह त्योहार समुदायों को प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने और समृद्धि और उर्वरता के लिए आशीर्वाद मांगने के लिए एक साथ लाता है। कई लोगों के लिए, यह परिवार और सांप्रदायिक सद्भाव के महत्व की याद दिलाता है।

आधुनिक समय में लोहड़ी कैसे मानते हैं?

- आज भी लोहड़ी का त्योहार भव्य और जीवंत बना हुआ है। शाम को लोग अलाव जलाकर लोकगीत गाते हैं, भांगड़ा और गिद्दा जैसे पारंपरिक नृत्य करते हैं और गुड़ रेवड़ी बांटते हैं।
- तिल, गुड़, पॉपकॉर्न और मूंगफली जैसी चीज़ों को आभार के तौर पर अग्नि में डाला जाता है।
- इस अवसर पर मक्की की रोटी, सरसों का साग, तिल के लड्डू, गज्जक और रेवड़ी तैयार किए जाते हैं।

Result Mitra

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन लोहड़ी के बारे में सही है?

1. लोहड़ी मुख्य रूप से भारत के दक्षिणी भागों में मनाया जाता है।
2. यह त्योहार सर्दियों के अंत और वसंत के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।
3. लोहड़ी केवल कृषि समुदायों द्वारा मनाया जाता है और इसका सांस्कृतिक महत्व नहीं है।
4. लोहड़ी में तिल, गुड़, पॉपकॉर्न और मूंगफली जैसी चीज़ों को अग्नि में नहीं डाला जाता।

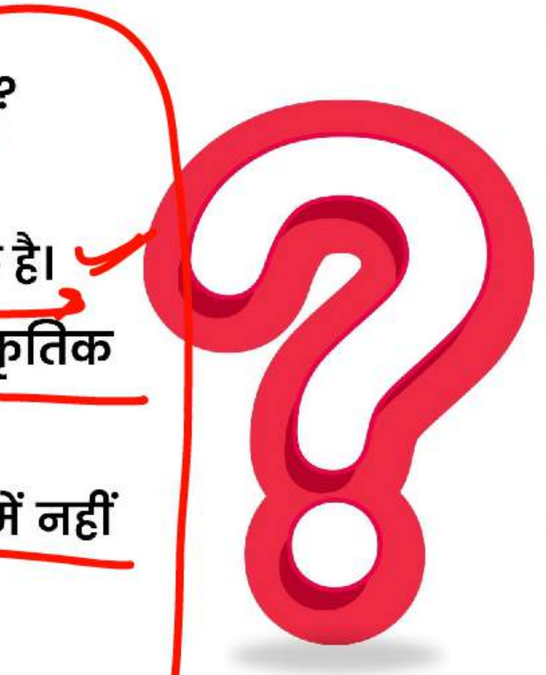

A. 1 और 3 सही हैं।

B. 2 और 4 सही हैं।

C. 2 सही है।

D. सभी कथन गलत हैं।

Result Mitra

मियावाकी तकनीक चर्चा में क्यों ?

मियावाकी तकनीक -चर्चा में क्यों ?

Result Mitra

- मियावाकी तकनीक, जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी द्वारा विकसित, शहरी क्षेत्रों में घने और तेजी से बढ़ने वाले वन बनाने की एक विधि है।
- इस पद्धति में देशी पौधों को एक-दूसरे के निकट लगाया जाता है, जिससे वे सामान्य से 10 गुना तेजी से बढ़ते हैं और 30 गुना अधिक सघनता प्राप्त करते हैं।

मियावाकी तकनीक -चर्चा में क्यों ?

Result Mitra

मियावाकी तकनीक चर्चा में क्यों है?

1. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उल्लेख:

- 18 जून 2023 को 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मियावाकी तकनीक का जिक्र किया।
- उन्होंने केरल के रामनाथ द्वारा इस तकनीक से विकसित 'विद्यावनम' और लखनऊ के अलीगंज में मियावाकी जंगल की प्रशंसा की, जिससे यह तकनीक व्यापक चर्चा में आई।

मियावाकी तकनीक -चर्चा में क्यों ?

Result Mitra

मियावाकी तकनीक चर्चा में क्यों है?

3. तेजी से वनों का विकास:

- मियावाकी पद्धति से पारंपरिक विधियों की तुलना में वन 20-30 वर्षों में विकसित हो जाते हैं, जबकि सामान्यतः इसमें 100 वर्ष लगते हैं। इस तेजी से वनीकरण की क्षमता के कारण यह तकनीक पर्यावरणविदों और शहरी योजनाकारों के बीच लोकप्रिय हो रही है।

मियावाकी तकनीक -चर्चा में क्यों ?

मियावाकी तकनीक चर्चा में क्यों है?

4. स्थानीय जैव विविधता का संरक्षण:

- इस विधि में देशी पौधों का उपयोग किया जाता है, जिससे स्थानीय जैव विविधता संरक्षित रहती है और पारिस्थितिकी तंत्र सुदृढ़ होता है।

मियावाकी तकनीक -चर्चा में क्यों ?

Result Mitra

मियावाकी तकनीक के लाभ:

- तेजी से वृक्षारोपण: पौधों की वृद्धि सामान्य से 10 गुना तेज होती है।
- घना वनावरण: 30 गुना अधिक सघनता से वन विकसित होते हैं।
- कम रखरखाव: तीन वर्षों के बाद ये वन आत्मनिर्भर हो जाते हैं और विशेष देखभाल की आवश्यकता नहीं होती।

मियावाकी तकनीक -चर्चा में क्यों ?

Result Mitra

मियावाकी तकनीक के लाभ:

- पर्यावरणीय सुधार: ये वन वायु प्रदूषण कम करने, तापमान नियंत्रित करने और ध्वनि प्रदूषण घटाने में सहायक होते हैं।
- मियावाकी तकनीक की बढ़ती लोकप्रियता और इसके सफल प्रयोगों के कारण यह वर्तमान में चर्चा का प्रमुख विषय बनी हुई है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन मियावाकी तकनीक के बारे में सही है?

1. मियावाकी तकनीक में विदेशी पौधों का उपयोग किया जाता है जिससे स्थानीय जैव विविधता प्रभावित होती है।

2. इस विधि से विकसित वनों में घनी वनस्पति होती है और इन्हें प्रबंधन की आवश्यकता नहीं होती।

3. मियावाकी तकनीक में छोटे स्थानों पर केवल एक प्रकार के पौधे लगाए जाते हैं।

4. मियावाकी विधि से विकसित वन पारंपरिक विधियों की तुलना में 50 साल में विकसित होते हैं।

A. 1 और 3 सही हैं।

B. 2 और 4 सही हैं।

C. 2 सही है।

D. सभी कथन गलत हैं।

Result Mitra

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Daily Current Affairs

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

- ईरान ने अपनी राजधानी को तेहरान से बदलकर मकरान बनाने की घोषणा की है।
- यह निर्णय तेहरान में बढ़ती जनसंख्या, बिजली और पानी की कमी जैसी समस्याओं से निपटने के उद्देश्य से लिया गया है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

मकरान की रणनीतिक स्थिति:

- मकरान, ईरान के दक्षिणी तट पर स्थित है और रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र हिंद महासागर और अरब सागर के निकट है, जिससे इसे एशिया, अफ्रीका और यूरोप के बीच व्यापारिक मार्गों का केंद्र माना जाता है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

भारत को संभावित लाभ:

1. चाबहार बंदरगाह के विकास में सहयोग:

- भारत मकरान के पास स्थित चाबहार बंदरगाह का विकास कर रहा है, जो मध्य एशिया तक पहुंचने के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग है।
- मकरान के राजधानी बनने से इस क्षेत्र में बुनियादी ढांचे का विकास तेज होगा, जिससे चाबहार बंदरगाह की उपयोगिता बढ़ेगी।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

भारत को संभावित लाभ:

2. व्यापारिक मार्गों में सुधार:

- मकरान की नई राजधानी बनने से भारत-ईरान-तुर्की कॉरिडोर को बढ़ावा मिलेगा, जो भारत को सीधे यूरोप से जोड़ता है।
- यह भारत-मध्य पूर्व-यूरोप (IMEC) कॉरिडोर और चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का एक विकल्प बन सकता है, जिससे व्यापारिक मार्गों में सुधार होगा।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

भारत को संभावित लाभ:

3. ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि:

- मकरान के विकास से कैस्पियन सागर से ऊर्जा संसाधनों की पाइपलाइनों के माध्यम से आपूर्ति संभव होगी, जिससे भारत की ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि होगी और परिवहन लागत में कमी आएगी।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

भारत को संभावित लाभ:

4. भूराजनीतिक संबंधों में मजबूती:

- मकरान के विकास में भारत की भागीदारी से ईरान के साथ द्विपक्षीय संबंध मजबूत होंगे, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

भारत को संभावित लाभ:

- ईरान की राजधानी को मकरान स्थानांतरित करने का निर्णय भारत के लिए रणनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है, जिससे दोनों देशों के बीच सहयोग और संबंधों में और मजबूती आ सकती है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

ईरान की राजधानी मकरान

- मकरान ईरान का एक ऐतिहासिक और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो देश के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित है।
- यह क्षेत्र अरब सागर और ओमान की खाड़ी के किनारे फैला हुआ है। मकरान को उसकी भौगोलिक स्थिति, समुद्री व्यापार और ऐतिहासिक महत्व के कारण जाना जाता है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

मकरान का भूगोल

स्थान:

- मकरान ईरान के सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है। यह क्षेत्र दक्षिण में अरब सागर और उत्तर में बलूचिस्तान पठार से घिरा है।

तटीय विस्तार:

- मकरान का तट लगभग 1,000 किमी लंबा है, जो रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ओमान की खाड़ी और अरब सागर तक पहुंच प्रदान करता है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

इतिहास और महत्व

- सिकंदर महान (Alexander the Great) ने अपने अभियान के दौरान मकरान क्षेत्र को पार किया था।
- ऐतिहासिक रूप से, मकरान बलूच समुदाय और उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों का केंद्र रहा है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

आर्थिक और रणनीतिक महत्व

1. चाबहार बंदरगाह:

- मकरान क्षेत्र में चाबहार बंदरगाह स्थित है, जो ईरान का एकमात्र महासागरीय बंदरगाह है।
- भारत चाबहार बंदरगाह को विकसित कर रहा है, जिससे अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुंचने में मदद मिलेगी।
- यह भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह पाकिस्तान में स्थित ग्वादर बंदरगाह (जिसे चीन विकसित कर रहा है) का विकल्प प्रदान करता है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

आर्थिक और रणनीतिक महत्व

2. ऊर्जा संसाधन:

- मकरान क्षेत्र खनिज और प्राकृतिक गैस से समृद्ध है, जिससे यह ईरान की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है।

3. भौगोलिक रणनीति:

- मकरान की भौगोलिक स्थिति इसे पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया, और मध्य एशिया के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान बनाती है।
- यह हिंद महासागर और ओमान की खाड़ी में नेविगेशन और सैन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

हाल की घटनाएं और योजनाएं

ईरान की राजधानी मकरान स्थानांतरित करने की योजना:

- ईरान ने हाल ही में घोषणा की है कि वह अपनी राजधानी तेहरान से बदलकर मकरान बनाने पर विचार कर रहा है।
- यह निर्णय बढ़ती जनसंख्या, प्रदूषण, और प्राकृतिक आपदाओं (जैसे भूकंप) के खतरे से निपटने के लिए लिया जा रहा है।
- मकरान को राजधानी बनाने से इस क्षेत्र में आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे का विस्तार होगा।

Daily Current Affairs

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

भारत और ईरान के संबंध

- मकरान और चाबहार के माध्यम से भारत और ईरान के बीच व्यापार और रणनीतिक साझेदारी मजबूत हो रही है।

संस्कृति और जनजीवन

- मकरान क्षेत्र बलूच समुदाय का घर है, जिनकी संस्कृति, भाषा और परंपराएं अनूठी हैं।
- यहाँ के लोग मुख्यतः मत्स्य पालन, पशुपालन और कृषि पर निर्भर करते हैं।

ईरान की नई राजधानी से भारत को फायदा

Result Mitra

भारत और ईरान के संबंध

- मकरान का ऐतिहासिक और रणनीतिक महत्व इसे ईरान और भारत दोनों के लिए एक प्रमुख क्षेत्र बनाता है। इसके विकास से एशिया और विश्व स्तर पर आर्थिक और राजनीतिक संतुलन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन मकरान क्षेत्र के बारे में सही है?

1. मकरान ईरान के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित है और अरब सागर से घिरा हुआ है।
2. मकरान क्षेत्र का मुख्य आर्थिक स्रोत कृषि है, न कि समुद्री व्यापार।
3. मकरान का तट लगभग 500 किमी लंबा है और यह केवल ईरान के लिए ही महत्वपूर्ण है।
4. मकरान क्षेत्र में चाबहार बंदरगाह स्थित है, जो भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

A. 1 और 2 सही हैं।

B. 1 और 4 सही हैं।

C. 2 और 3 सही हैं।

D. 1, 3 और 4 सही हैं।

माउंट अकोंकागुआ सैन्य अभियान एवं माउंट अकोंकागुआ के बारे में

Result Mitra

माउंट अकोंकागुआ सैन्य अभियान एवं माउंट अकोंकागुआ के बारे में

- माउंट अकोंकागुआ दक्षिण अमेरिका की एंडीज़ पर्वतमाला का सबसे ऊंचा पर्वत है, जिसकी ऊंचाई 6,961 मीटर (22,838 फीट) है। यह एशिया के बाहर विश्व का सबसे ऊंचा पर्वत भी है। अर्जेंटीना के मेंडोज़ा प्रांत में स्थित, यह पर्वत पर्वतारोहियों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है।

माउंट अकोंकागुआ

- स्थान: अर्जेंटीना के मेंडोज़ा प्रांत में एंडीज़ पर्वतमाला में स्थित।
- ऊंचाई: 6,961 मीटर (22,838 फीट)।
- विशेषता: एशिया के बाहर विश्व का सबसे ऊंचा पर्वत।
- पर्वतारोहण: अकोंकागुआ पर चढ़ना अपेक्षाकृत सरल माना जाता है, क्योंकि इसमें तकनीकी चढ़ाई की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन ऊंचाई और मौसम की चुनौतियों के कारण सावधानी आवश्यक है।

Result Mitra

माउंट अकोंकागुआ

हाल के सैन्य अभियान:

- हाल ही में, उत्तराखंड पुलिस के विशेष आपदा प्रतिक्रिया बल (SDRF) के हेड कांस्टेबल राजेंद्र नाथ ने माउंट अकोंकागुआ पर चढ़ाई के लिए अभियान शुरु किया है।
- 12 जनवरी 2025 को, पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार ने उन्हें पुलिस प्रतीक चिन्ह देकर इस अभियान के लिए रवाना किया। यह अभियान उत्तराखंड पुलिस के साहसिक प्रयासों का हिस्सा है, जो राज्य के जवानों की क्षमता और धैर्य को प्रदर्शित करता है।

Result Mitra

माउंट अकोंकागुआ

हाल के सैन्य अभियान:

- माउंट अकोंकागुआ की भौगोलिक स्थिति और ऊंचाई इसे पर्वतारोहियों के लिए एक महत्वपूर्ण गंतव्य बनाती है, जबकि ऐसे अभियानों से भारतीय सुरक्षा बलों की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा और अनुभव में वृद्धि होती है।

Result Mitra

अकोंकागुआ

- अकोंकागुआ अर्जेंटीना के मेंडोज़ा प्रांत में एंडीज़ पर्वत श्रृंखला के मुख्य कॉर्डिलेरा में एक पर्वत है।
- यह अमेरिका का सबसे ऊँचा पर्वत है, एशिया के बाहर सबसे ऊँचा पर्वत है, और पश्चिमी गोलार्ध और दक्षिणी गोलार्ध दोनों में सबसे ऊँचा पर्वत है जिसकी चोटी की ऊँचाई 6,961 मीटर है।

Result Mitra

एंडीज़ पर्वतमाला

- एंडीज़ पर्वतमाला दुनिया की सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला है, जो दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट पर फैली हुई है।
- यह पर्वतमाला अपनी भौगोलिक विविधता, प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक महत्व के लिए जानी जाती है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन माउंट अकोंकागुआ और एंडीज़ पर्वतमाला के बारे में सही है?

1. माउंट अकोंकागुआ, एंडीज़ पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी है और इसकी ऊंचाई 6,961 मीटर है।

2. एंडीज़ पर्वतमाला केवल अर्जेंटीना में स्थित है और इसकी लंबाई लगभग 4,300 किलोमीटर है।

3. माउंट अकोंकागुआ पर चढ़ाई के लिए तकनीकी चढ़ाई की आवश्यकता होती है, जिससे यह पर्वतारोहियों के लिए अत्यधिक चुनौतीपूर्ण बनता है।

4. एंडीज़ पर्वतमाला में स्थित माचू पिचू, इंका सभ्यता का सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल है, जो पेरू में स्थित है।

A. 1 और 4 सही हैं।

B. 1 और 2 सही हैं।

C. 2 और 3 सही हैं।

D. 1 और 3 सही हैं।

AI सम्मेलन में भाग लेने फ्रांस जायेंगे PM मोदी एवं क्या होता है AI

AI सम्मेलन में भाग लेने फ्रांस जायेंगे PM मोदी एवं क्या होता है AI

Result Mitra

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 10 से 11 फरवरी 2025 को फ्रांस में आयोजित होने वाले आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक्शन समिट में भाग लेंगे।
- फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने इस सम्मेलन की घोषणा की है, जिसमें अमेरिका, चीन, भारत सहित अन्य प्रमुख देशों के नेता शामिल होंगे। इस समिट का उद्देश्य नवाचार, प्रतिभा, सार्वजनिक हित, और वैश्विक AI शासन पर चर्चा करना है।

AI सम्मेलन में भाग लेने फ्रांस जायेंगे PM मोदी एवं क्या होता है AI

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है?

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता।
- इसके ज़रिये कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है।

AI सम्मेलन में भाग लेने फ्रांस जायेंगे PM मोदी एवं क्या होता है AI

Result Mitra

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है?

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है अर्थात यह मशीनों द्वारा प्रदर्शित किया गया इंटेलिजेंस है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह इंटेलिजेंस तरीके से सोचने वाला सॉफ़्टवेयर बनाने का एक तरीका है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है?

- यह इसके बारे में अध्ययन करता है कि मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और समस्या को हल करते समय कैसे सीखता है, कैसे निर्णय लेता है और कैसे काम करता।

सरकार दे रही बढ़ावा

- इसके अलावा सरकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, बिग डाटा इंटेलिजेंस, रियल टाइम डाटा और क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, मानव संसाधन और कौशल विकास को बढ़ावा देने के योजना बना रही है।

ऐसे हुई थी शुरुआत

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आरंभ 1950 के दशक में ही हो गया था, लेकिन इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में फिफ्थ जनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर-कंप्यूटर के विकास के लिये 10-वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।

ऐसे हुई थी शुरुआत

- इसके बाद अन्य देशों ने भी इस ओर ध्यान दिया। ब्रिटेन ने इसके लिये 'एल्वी' नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ के देशों ने भी 'एस्प्रिट' नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की थी।
- इसके बाद 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों, जैसे-Very Large Scale Integrated सर्किट का विकास करने के लिये एक संघ 'माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी' की स्थापना की।

ट्रंप का शपथ समारोह और एस. जयशंकर का शामिल होना क्या है भारत की कूटनीतिक स्थिति

Result Mitra

ट्रंप का शपथ समारोह और एस. जयशंकर का शामिल होना क्या है भारत की कूटनीतिक स्थिति

Result Mitra

- भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर 20 जनवरी 2025 को वाशिंगटन डी.सी. में आयोजित होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

ट्रंप का शपथ समारोह और एस. जयशंकर का शामिल होना क्या है भारत की कूटनीतिक स्थिति

Result Mitra

भारत की कूटनीतिक स्थिति पर प्रभाव:

- **1. भारत-अमेरिका संबंधों की मजबूती:** जयशंकर की उपस्थिति से दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को और सुदृढ़ करने का संकेत मिलता है, विशेषकर रक्षा, व्यापार, और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में।
- **2. उच्च स्तरीय संवाद:** इस अवसर पर जयशंकर अमेरिकी प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों से मिलकर द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा करेंगे, जिससे भविष्य की नीतियों और सहयोग की दिशा निर्धारित होगी।

भारत की कूटनीतिक स्थिति पर प्रभाव:

- **3. वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका:** इस समारोह में भागीदारी से भारत की वैश्विक कूटनीतिक उपस्थिति और प्रभाव का प्रदर्शन होता है, जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उसकी सक्रिय भूमिका को दर्शाता है।
- **4. क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान:** जयशंकर की उपस्थिति से भारत को अपने पड़ोसी देशों और क्षेत्रीय मुद्दों पर अमेरिका के साथ मिलकर काम करने का अवसर मिलेगा, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा।

ट्रंप का शपथ समारोह और एस. जयशंकर का शामिल होना क्या है भारत की कूटनीतिक स्थिति

Result Mitra

भारत की कूटनीतिक स्थिति पर प्रभाव:

- कुल मिलाकर, एस. जयशंकर की इस महत्वपूर्ण समारोह में भागीदारी से भारत-अमेरिका संबंधों में नई ऊर्जा का संचार होगा और वैश्विक मंच पर भारत की कूटनीतिक स्थिति को और सुदृढ़ किया जा सकेगा।

ट्रंप का शपथ समारोह और एस. जयशंकर का शामिल होना क्या है भारत की कूटनीतिक स्थिति

Result Mitra

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह

- डोनाल्ड ट्रंप, अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति, 20 जनवरी 2025 को पुनः राष्ट्रपति पद की शपथ लेने जा रहे हैं। उनके शपथ ग्रहण समारोह की तैयारियाँ जोरों पर हैं, जिसमें कई परंपराओं को तोड़ा गया है।
- उदाहरण के लिए, ट्रंप ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग को भी शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया है, जो अमेरिकी इतिहास में एक असामान्य कदम है।

ट्रंप का शपथ समारोह और एस. जयशंकर का शामिल होना क्या है भारत की कूटनीतिक स्थिति

Result Mitra

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह

- हाल ही में, ट्रंप को हश मनी मामले में दोषी ठहराया गया था, लेकिन अदालत ने उन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया। यह घटना अमेरिकी इतिहास में पहली बार हुई है, जब किसी राष्ट्रपति को सजा मिली है।

ट्रंप का शपथ समारोह और एस. जयशंकर का शामिल होना क्या है भारत की कूटनीतिक स्थिति

Result Mitra

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह

- इसके अलावा, ट्रंप ने 6 जनवरी 2021 को अमेरिकी संसद पर हुए हमले में शामिल दंगाइयों को माफ करने की संभावना जताई है, जबकि उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने इस पर अपनी राय अलग रखी है।
- इन घटनाओं से ट्रंप की आगामी राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण और उनके प्रशासन की नीतियों पर वैश्विक ध्यान केंद्रित है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह और एस. जयशंकर की उपस्थिति के बारे में सही है?

1. एस. जयशंकर 20 जनवरी 2025 को वाशिंगटन डी.सी. में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

2. ट्रंप ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में केवल अमेरिकी प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों को आमंत्रित किया है।

3. ट्रंप ने शपथ ग्रहण समारोह में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग को आमंत्रित किया है, जो अमेरिकी इतिहास में एक असामान्य कदम है।

4. ट्रंप को हश मनी मामले में दोषी ठहराया गया था, लेकिन उन्हें सजा दी गई और उनका शपथ ग्रहण समारोह रद्द कर दिया गया।

A. 1 और 3 सही हैं।

B. 1, 3 और 4 सही हैं।

C. 1 और 2 सही हैं।

D. 2, 3 और 4 सही हैं।

Result Mitra

Thank You